# धर्म जीवन

नवम्बर 2006

- परम पू० भगवान देवात्मा का 156 वां महोत्सव मुबारक
- देवात्मा की शरण विकल्पिक (Optional) नहीं
- आपने युगों का अन्धकार नष्ट कर दिया है
- देवात्मा का दर न मिलता, तो मैं कहां होता?
- साफ–सुथरी सोच
- सफाई, सुन्दरता और तरतीब
- हमने क्या खो दिया है?
- शुभ संग्राम

# परम पू० भगवान देवात्मा का 156 वां महोत्सव मुबारक

जिस तरह पहले सूचित किया जा चुका है, परम पू० भगवान देवात्मा का शुभ जन्म महोत्सव बिल्कुल निकट आ रहा है। इस वर्ष जन्म महोत्सव 3 दिसम्बर से 6 दिसम्बर तक चाव भाव से चण्डीगढ़ धर्मशाला सैक्टर 18 डी में धूम-धाम से मनाया जा रहा है। यह इतवार, सोमवार, मंगलवार और बुधवार के दिन हैं।

सब साथी सेवकों और अन्य सम्बन्धित जनों को निवेदन है कि इस शुभ अवसर पर अवश्य ही पधारें और इसके लिए अभी से तैय्यारियां शुरू कर दें।

6 नवम्बर को परम पू० भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में विशेष साधनों के दिन शुरू होते हैं। इस आरम्भिक दिन को भी पूरे चाव भाव से और उत्साह से जगह जगह मनाने की अवश्यकता है।

महोत्सव से लाभ उठाने के लिए अपने हृदयों को तैयार करने का विशेष ध्यान रखें। अभी से परम पू० भगवान देवात्मा के अद्वितीय जीवन के सम्बन्ध में पाठ और विचार शुरू करना चाहिए। जीवन कथाएं, आत्म-कथा, मुझ में देव जीवन का विकास (भाग 1, भाग 2) और अद्वितीय त्यागों का पाठ बहुत हितकर और उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इतवार के दिन पूजा के साधनों से पहले प्रभात फेरी या फिर कुछ भजनों के गान का साधन हो सकता है।

गुरु महाराज और उनकी समाज के साथ जुड़कर अपना वा अपने परिवार का जो हित साधन हुआ है, उसके चिन्तन और उपकार स्मरण करना, लिखने का साधन करना बहुत लाभदायक हो सकता है।

दूसरों के पास भगवान देवात्मा की महिमा का ब्यान करके, उन्हें महोत्सव से लाभ उठाने के लिए तैयार करना चाहिए। दूसरों से पाप छुड़ाने, उन तक समाज की पुस्तके पहुँचाने का साधन करके अपना भला कर सकते हैं।

सच्चा सेवक, सच्चा श्रद्धावान कभी और किसी कीमत पर भी इस शुभ अवसर से वंचित नहीं रहना चाहेगा क्योंकि यह हमारी सेवकी की प्रतिज्ञा में भी शामिल है। अपने परिवार सहित आने के लिए अभी से ही अपना संग्राम आरम्भ करने की कृपा करें। अच्छे लिबास वा एकाकारी का प्रबन्ध अभी से कर लें।

यह शुभ अवसर अत्यन्त हितकर और अद्वितीय अवसर है। इस शुभ अवसर पर जो रोशनी और तेज भरपूर अद्वितीय प्रभाव हैं, वह सारे संसार में एक अद्भुत वरदान हैं इन प्रभावों से हमारा आत्मिक हित जुड़ा हुआ है। यह प्रभाव वर्तमान और भविष्य के लिए हमारे हित के स्त्रोत है। इन दुर्लभ देव प्रभावों से हमारा कितना हित हुआ है और कितना हो सकता है, उसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। हमारे जीवन का तख़्ता इन प्रभावों ने ही बदला है। हमारे पापी जीवन से निजात देने की समर्थ्य इन देव प्रभावों में ही है। हमारे भीतर उच्च भाव संचार करने की क्षमता भी इन्हीं देव प्रभावों में है।

इसलिए बार-बार विनम्र निवेदन है कि आप और आपका कोई परिवारिक जन इस महा सौभाग्य से वंचित न रहे। धन्यवादी होंगे।

-मन्त्री

# धर्म जीवन

खण्ड 18 अंक 11
नवम्बर 2006
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़


## देवात्मा की शरण विकल्पिक (Optional) नहीं

परम पू० भगवान देवात्मा को नेचर ने अपने विकास क्रम में सब विकास उत्पादक हस्तियों के क्रम में एक अद्भुत, महा वचित्र और महा हितकर हस्ती पैदा की है। उनका एक विशेष स्थान है और उनकी प्रत्येक अस्तित्व को अतिशय अवश्यकता है।

देवात्मा की शरण में आना मनुष्य के लिए Optional नहीं। मनुष्य की मन मर्ज़ी की बात नहीं, इसका कोई और विकल्प नहीं है। यह अति अवश्यक अर्थात Campulsaory है। इसके बिना मनुष्य का कोई गुज़ारा नहीं हो सकता।

नेचर ने मनुष्य के लिए और कोई Choice नहीं रखी, यह उसकी मर्जी नहीं बल्कि परम अवश्यकता है।

जिस प्रकार मनुष्य के लिए हवा, पानी, खुराक Optional नहीं, यहां उसकी मर्ज़ी नहीं चल सकती कि यदि चाहे तो हवा ले, वह चाहे तो पानी ले, वह चाहे तो खुराक खाए, यह इसलिए है कि उसके जीने के लिए यह चीज़ें परम अवश्यक हैं। जैसे हवा, पानी और खुराक प्रत्येक मनुष्य के लिए, चाहे वह किसी कौम, किसी देश या किसी रंग का हो, परम अवश्यक है, इसी प्रकार आत्मा के जिन्दा रखने के लिए देवात्मा की शरण परम अवश्यक है। नेचर में इसके चुनाव का कोई प्रावधान नहीं। क्योंकि मनुष्य का इसके बिना गुज़ारा ही नहीं हो सकता। देवात्मा के बिना मनुष्य की मूल इच्छाएं भी पूरी नहीं हो सकती।

मनुष्य की मूल इच्छाएं कौन-कौन सी है? दो मूल इच्छाएं है, वह जिन्दा रहना चाहता है, सुखी रहना चाहता है। मनुष्य देवात्मा की शरण के बिना न जिन्दा रहने के योग्य रहता है और न ही सुख से जीने के योग्य होता है। दुख और नाश से बचने के लिए सुख दायक जीवन व्यतीत करने के लिए, मनुष्य के लिए देवात्मा की शरण, हवा, पानी वा अनाज की तरह अवश्यक है।

मनुष्य को शारीरिक रोग लगते हैं, मनुष्य तपेदिक का शिकार हो जाता है, जोड़ों वा हड्डियों के दर्द से पीड़ित हो जाता है, हृदय रोग से दुखी होता है, इन दुखों से निजात पाने के लिए वह डाक्टरों का मोहताज है। वहां X-Ray, ऐंजोग्राफी आदि का पूरा मोहताज है। इन टैस्टों के बिना अच्छे से अच्छे, महान से महान डाक्टर न रोग की प्रकृत हालत को देख सकते हैं और न ही उनका ठीक ईलाज हो सकता है, जिस प्रकार मनुष्य X-Ray, ऐंजोग्राफी M.R.I. की रोशनी का मोहताज है, उसी प्रकार मनुष्य देवात्मा की विचित्र ज्योति और तेज का पूर्ण रूप से मोहताज है। इस परम सत्य वा हकीकत को अभी मनुष्य देखने के लिए तैयार नहीं। यहां तक कि देवात्मा की शरण प्राप्ति

का सौभाग्य पाने वाले मनुष्य भी उक्त सत्य को न सब देखने के योग्य हैं, न ही पूरी तरह अनुभव करने के योग्य हैं।

देवात्मा के साथ जुड़ना हित लाभ करना है, उचित सुख प्राप्त करना है, देवात्मा के साथ न जुड़ना हानि वा नाश प्राप्त करना है, दुख और पीड़ा का शिकार होना है। यह नेचर की अटल सचाईयां हैं।

मनुष्य को सुख से जीवन व्यतीत करने के लिए इन सत्यों को देखने की अवश्यकता है।

1. मनुष्य की हस्ती में उसे जिन्दा रखने वाली कौन सी चीज़ है? 2. मनुष्य को कौन चलाता है? 3. मनुष्य को दुख क्यों मिलता है? 4.मनुष्य को उक्त दुखों से कौन बचा सकता है? 5. मनुष्य को उचित सुख कैसे प्राप्त हो सकते हैं। 6. मनुष्य को जिन्दा रखने वाली वस्तु कैसे स्वयं जिन्दा रह सकती है, और उसको अवश्यक सहायता कहां से और कैसे मिल सकती है?

**पहला सत्य कि मनुष्य को कौन जिन्दा रख सकता है और रखवता है :-** मनुष्य पौधों वा पशुओं को जिन्दा रखने वाली, उनके भीतर वर्तमान उनकी जीवनी शक्ति है। यह है तो कोई जीवधारी जिन्दा रह सकता है, नहीं तो मर जाता है। मनुष्य वा अन्य जीवधारियों को जीवनी शक्ति के बिना और कोई देवी, देवता, ईश्वर या कोई और पीर जिन्दा रखने वाला नहीं है। इसलिए जीवनी शक्ति ही मनुष्य के भीतर मुख्य वा मूलवस्तु है। मनुष्य इस सच्चाई को देवात्मा की रोशनी के भीतर भली भांति देख सकता है और अनुभव कर सकता है। जीव वैज्ञानिक भी इस सच्चाई को रोशन कर सकते हैं।

**दूसरी सचाई के मनुष्य को कौन चलाता है?** इससे भी मनुष्य अभी पूरी तरह ग़फिल वा बेसुध है। मनुष्य को उसकी भाव शक्तियां अर्थात सुखों के आकर्षण वा दुखों के विकर्षण चलाते हैं। और कोई दैवी शक्ति उसको नहीं चलाती। नेचर को नेचर की शक्तियां चलाती है। सूर्य, चन्द्र और अन्य ग्रहों की प्रचालक नेचर की शक्तियां ही हैं। न नेचर को कोई और चलाता है और न ही मनुष्य को उसकी भाव शक्तियों के बिना कोई और चलाता है। इन परिचालक भावों को जाने बिना मनुष्य का गुज़ारा नहीं। वह दुखों से वा विनाश से नहीं बच सकेगा। कोई मनुष्य जैसे अपने दिल की अवस्था अपने आप नहीं देख सकता, उसी प्रकार वह, विज्ञानी होकर अपने परिचालक भावों की अवस्था को साफ-साफ नहीं देख सकता। इसलिए वह देवात्मा की रोशनी का पूर्ण मोहताज है। नेचर ने वह रोशनी केवल देवात्मा के भीतर ही विकसित की है। अपने परिचालक भावों या शक्तियों को जानने, देखने, उनकी हानि लाभ को अनुभव करने के लिए देवात्मा की ज्योति का प्रकाश अवश्यक है। कोई बड़े से बड़ा मनुष्य अपने आप मन्दिरों, गुरुद्वारों, मस्जिदों, गिरजाघरों, पगौडों में सिर रगड़कर भी अपने भावों की ठीक-ठीक अवस्था को देख वा अनुभव नहीं कर सकता। नेचर ने इस पक्ष को रोशन करने के लिए मनुष्य को देवात्मा का मोहताज अर्थात उनकी रोशनी का मोहताज बनाया है। इस रोशनी भरपूर वातावरण को पाए बिना प्रत्येक मनुष्य कुछ अधूरा रहता है और दुख पाता है। देवात्मा की रोशनी का प्रकाश मनुष्य को अपनी अर्न्तात्मा देखने के लिए, अपने चालक भावों की ठीक-ठीक चाल वा व्यवस्था देखने के लिए मनुष्य की आत्मिक आंखों का काम करता है। इस रोशनी के बिना मनुष्य अपनी प्रकृत अवस्था के सम्बन्ध में सदा अन्धा रहता है, ठोकरें खाता है और दुख उठाता है।

**तीसरी सचाई कि मनुष्य के दुखों का कारण क्या है?** यह देखने के लिए प्रत्येक मनुष्य उस ज्योति का मोहताज है। मनुष्य के नीच भाव मनुष्य के दुखों से नाश करने का एक मात्र कारण हैं। अपने

दुख दायक वा विनाशकारी भावों को उनके भयानक वा विनाशकारी रूप में देखने के लिए और उनसे बचने की इच्छा और प्रेरणा लाभ करने के लिए मनुष्य उक्त रोशनी का मोहताज है। उस रोशनी के बिना वह मिथ्या और अन्धेरे में धक्के खाता है और बुरी तरह बर्बाद होता है।

**चौथी सचाई मनुष्य को दुखों से या दुख उत्पन्न करने वाले भावों से कौन बचा सकता है?** देवात्मा की अद्वितीय ज्योति और तेज की प्राप्ति से मनुष्य नीच और दुखदाई भावों से मुक्त हो जाता है और उससे मुक्त होने की मिकदार अनुसार उसके दुख दूर हो जाते हैं। मनुष्य सुखी वा आनन्द में रहता है। उसका एक नई दुनियां में प्रवेश हो जाता है।

**पांचवी सचाई मनुष्य को उचित सुखों की प्राप्ति** कैसे हो सकती है? देवात्मा की अद्भुत ज्योति का प्रकाश मनुष्य को दिखाता है कि उच्च भावों की उत्पति, श्रद्धा, कृतज्ञता, दया, हानि परिशोध, परोपकार के भावों का मानव हृदय में विकास होने से, उच्च खुशीयों की वर्षा होने लगती है। मनुष्य उच्च भाव धारी होकर और ही दुनियां का निवासी हो जाता है या हो सकता है। देवात्मा का आद्वितीय देव तेज अधिकारी मानव हृदयों के भीतर उच्च भावों का उत्पादन करता है। उसको नया रुप देता है। वह हृदय उच्च खुशीयों के वारिस बनते हैं।

**छटी सचाई कि मनुष्य की जीवनी शक्ति अर्थात आत्मा का बल कैसे बढ़ सकता है, वह कैसे चिंरजीव बन सकता है?** उच्च भावों का काम ही निर्माण की गतियां करना होता है, विकास की क्रियाएं करना होता है। निर्माणकारी गतियां, पर सेवा की गतियां आत्मा की बलवर्धक गतियां हैं। विनाशकारी ध्वंसकारी गतियां, बिगाड़ने की गतियां, आत्मा का बल घटाने वाली गतियां हैं। देवात्मा से प्राप्त बल जहां उच्च भाव हमारे भीतर पैदा करता है, वहां निर्माण वा भलाई की गतियां भी करवाता है। इसलिए मनुष्य उनके बल वा तेज का सदा मोहताज है।

कोई मनुष्य ऐसा नहीं, जो देवात्मा की शरण में आया हो, वह पहले से बेहतर सुखी न हुआ हो, और कोई मनुष्य ऐसा नहीं जो देवात्मा से परे गया हो, वह पहले से खराब, बुरा और दुखी न हुआ हो।

प्रश्न यह है कि देवात्मा की शरण में तो बहुत थोड़े जन आते हैं या आए हैं। क्या उनकी शरण के बिना महान इन्सान नहीं होते, जैसे महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल जी, आईन सटाईन आदि। क्या यह महान नहीं थे, क्या देवात्मा के बिना उन्हें कोई घाटा पड़ा?

निश्चय कुछ लोग देवात्मा की शरण के बिना संसार में महान हुए हैं। मनुष्य विरासत वा वातावरण की देन है। महान लोग उच्च विरासत रखकर और उच्च वातावरण पाकर महान अवश्य होते हैं। कई पक्षों में सेवाकारी और परोपकारी भी होते है, ऐसा होकर भी देवात्मा की शरण के बिना वह बड़े घाटे के शिकार रहते हैं। पंडित जवाहर लाल जी सिगरेट पीते थे, मांस, शराब का प्रयोग करते रहे, अपने भावों के ज्ञान से वंचित रहे। इसलिए कई पक्षों में महान होकर भी उनकी आत्मा हानि वा घाटे की शिकार रही।

इस प्रकार आईन-सटाईन साहिब, मदर टैरेसा, राज राम मोहन-राय जी आदि कई पक्षों में बहुत महान थे, पर अपने अस्तित्व, अपनी गतियों अपने भावों को जानने के विषय में घोर अन्धकार में थे। इस अन्धेरे के घाटे उनके अस्तित्व के साथ उनके कई पक्षों में बहुत महान होकर भी चिमटे रहे। उनके कारण कई उनमें से मोटी हानिकारक गतियां भी करते रहे।

देवात्मा की रोशनी के प्रकाश के बिना प्रत्येक मनुष्य अन्धा है और ठोकरें खाने के लिए मजबूर हो जाता है और हानि प्राप्त करके अपने आप से अनजान रहना भी अवश्यम्भावी है।

बलदेव सिंह

# आपने युगों का अन्धकार नष्ट कर दिया है

*जीवन दाता भगवन्!*

*आपकी अद्वितीय ज्योति के प्रकाश में* ***अधिकारी आत्मा एक एक रहस्य की तह तक पहुंचने के योग्य हो जाता है।*** *आपने आत्मा के विषय में जटिलतम समस्याओं का समाधान कर दिया है और जो बातें विरोधाभास प्रतीत होती थी, उन्हें दुनियां के लिए आसान बना दिया है। मनुष्य के लिए एक कठिन पहेली थी-बुराई क्या है और क्यों है, दुखों का क्या कारण है और वह क्यों कर दूर हो सकते हैं? शरीर की मृत्यु के बाद मनुष्य का क्या अंजाम होता है, आत्मा का लक्ष्य या उसकी मंज़िल क्या है, तथा नेचर के साथ आत्मा का संबंध क्या है?*

*इन सब समस्याओं के बारे में चारों ओर अन्ध कार ही अन्धकार फैला हुआ है। सत्य घटनाओं से नहीं, बल्कि कल्पना से, जीवन और नेचर के नियमों के अध्ययन से नहीं किन्तु अन्धेरे युगों में लिखी गई तथाकथित ईश्वर-रचित पुस्तकों से, या व्यर्थ की अनुमानमूलक और कल्पना मूलक उड़ानों से सत्य की खोज की जाती है। और झूठी तस्सलियां देने वाली धारणाएं, न कि ठोस सचाईयां, प्राप्त करने की कोशिश की जाती है।*

*आपने इन सब समस्याओं के विषय में युगों का अन्धकार अपनी अद्वितीय ज्योति से दूर कर दिया है। मेरी कामना है कि हम लोग अनुभव कर सकें कि हम आपके कितने ऋणी हैं। प्रत्येक अधिकारी आत्मा जो आपके चरणों में पहुँच गया है, उसके लिए दुख, बुराई, मौत के बाद ज़िन्दगी तथा आत्मा के लक्ष्य की समस्याएं उसी प्रकार स्पष्ट हो जाती हैं जिस प्रकार भौतिक घटनाएं। यह आपकी ज्योति का चमत्कार है। आपके अति तुच्छ सेवक भी होश की बातें करने लगते हैं। देव समाज में हल चलाने वाला किसान भी वह सच्चाईयां बताने के योग्य हो जाता है, जिन्हें आपकी ज्योति से वंचित अच्छे ग्रेजुएट भी नहीं देखते। यह आपका ऐसा दान है जो हमें होश देता है, क्योंकि यह हमें रौशनी प्रदान करता है।*

*यह विचार मेरे मन में प्रवाहित होने आरम्भ हो गए, जब आपकी अद्वितीय ज्योति में मैंने इस अदभुत सत्य के दर्शन किए कि किस प्रकार हमारी अनगणित मुसीबतें दूर हो जाएंगी और पतनकारी बुराईयां नष्ट हो जाएंगी, यदि हम आपके अद्वितीय प्रभावों में ढल कर जो कुछ सत्य और शुभ है, उसे देख सकें और उसके अनुसार चल सकें और झूठ और बुराई का त्याग कर सकें। हमारा दुर्भाग्य यह है कि हम सुख को ही अपने जीवन का लक्ष्य समझ कर उसी को अपने जीवन और आशाओं का आधार बनाते हैं। हम अपने इर्द गिर्द की सब वस्तुओं का मूल्य उनसे प्राप्त होले वाले सुख से लगाते हैं न कि सचाई और भलाई के विचार से उनके उपयोगी होने या न होने से। इसी का फल है कि यदि झूठ से हमारे किसी सुख की तृप्ति होती है, तो हम उस झूठ को ग्रहण कर लेते हैं, और यदि बुराई से हमारा कोई नीच सुख तृप्त होता है, तो हम उस बुराई को अपना लेते हैं। इस विकृत जीवन के कड़वे फलों से हम बच नहीं सकते। हमारे स्वस्थ्य, यश और जीवन की हानि होती है।*

*अपनी प्रशंसा का प्यार हमें सुख देता है। इसके फल स्वरूप हम अपने आत्मिक रोगों को छुपाने की कोशिश करते हैं क्योंकि उनके प्रगट होने से हमारी प्रशंसा में कमी आती है। जो वस्तुएं और सदगुण हम नहीं रखते, उनके रखने का भी हम स्वांग भरते हैं, इससे हमें प्रशंसा प्राप्त होती है। करोड़ों मनुष्य यह बनावटी और दिखावे का जीवन व्यतीत करते हैं। परन्तु नेचर झूठ को परे फेंकती है। इसलिए किसी न*

*किसी दिन यह बुलबुला फट जाता है और हम अनुचित दुखों का शिकार हो जाते हैं।*

*इसी प्रकार पत्नी, बच्चे, धन दौलत, सम्पत्ति, सत्ता और प्रसिद्धि से हमें सुख मिलता है। हम झूठ, बुराई और अनुचित मोह बन्धन के द्वारा भी उनके साथ चिमटे रहते हैं। हम यह श्रेष्ठ सत्य भूल जाते हैं कि सब कुछ नेचर का है और हम उन्हें किसी तरह भी सदा के लिए अपने पास नहीं रख सकते। हम जीवन उल्टे मार्ग पर डाल देते हैं। जुदाई की घड़ी आ जाती है और हमारे जीवन की नाव दुख और पतन के सागर में डूब जाती है।*

*हम स्वार्थ और अन्धकार को मुख्य रखकर अपने सारे सम्बन्ध बनाते हैं, न कि सत्य और शुभ के आधार पर, इसलिए घोर दुख और पतन हमारे हिस्से में आते हैं।*

*भगवन्! आप हमें उस भयानक दलदल से निकाल रहे हैं। आप सचमुच बचावन हार हैं। आपसे दूर जाकर मौत है। मैं अनुभव करता हूं कि आपके श्री चरणों से परे जाने में पागलपन है। आपके चरणों में उन्नतशील उच्च जीवन मिलता है। मुझे स्वस्थ्य और उच्च सुख प्राप्त होते हैं। आपके चरणों में मुझे आपके वह पावन देव प्रभाव मिलते हैं, जो निराशा, अन्धकार और विनाश को दूर भगाते हैं। जो आत्मा आपके अद्वितीय प्रभावों से बाहर श्वास लेता है, वह कदापि सुरक्षित नहीं। काश! मैं इस महान सत्य को अधिक से अधिक अनुभव कर सकूं।*

*आपका तुंच्छ सेवक*

*प. व. क*

# शांति है स्वर्ग और क्रोध नरक

एक युवा सैनिक ने कई शास्त्र पढ़ रखे थे। वह यह बात जानना चाहता था की स्वर्ग और नरक में क्या अंतर है। वह एक संत के पास पहुँचा और उनसे पूछा - आप मुझे बताएं कि क्या स्वर्ग और नरक वास्तव में होते हैं या कि वह लोगों की कपोल कल्पना है। संत ने उसे अच्छी तरह से देखा और पूछा - मित्र तुम्हारा पेशा क्या है? उस युवक ने उत्तर दिया, मैं सैनिक हूं।

संत ने उसका तिरस्कार करते हुए कहा - तुम और सैनिक! तुम्हें कौन सैनिक कहेगा और किसने तुम्हें सैनिक नियुक्त किया है। चेहरे से तो तुम एक भिखारी ही लगते हो। यह सुनना भर था कि उसे सैनिक का खून गुस्से से खौल उठा। उसका हाथ तलवार की म्यान तक जा पहुंचा। संत ने कहा अच्छा तो तुम साथ में तलवार भी रखते हो। बहुत अच्छे, इस खिलौने की तलवार से तुम किसे डराने चले हो? इस बोथरी तलवार से तो घास भी नहीं कटेगी और तुम इससे मुझे डरा रहे हो।

यह बात सुनकर सैनिक आपा। खो बैठा और उसने झट से म्यान में से तलवार निकाल ली। संत ने कहा - लो यह है नरक का द्वार। संत की बात का मर्म समझते ही युवक की आंखें खुल गई और अपने किए क्रोध पर वह ग्लानि से भर गया। पश्चाताप में वह घुटने पर गिर पड़ा और उसने तलवार पुनः म्यान में रख ली। संत ने कहा - लो अब स्वर्ग का द्वार खुल गया।

स्वर्ग एवं नरक, आनंद और दुःख की वह स्थिति है जो हम शांति रखकर या क्रोध पर उत्पन्न करते हैं। जिस क्षण व्यक्ति क्रोध करता है उसका संपूर्ण अस्तित्व एक गहरी अशांति के हवाले हो जाता है, यह प्रत्यक्ष नरक के समान दुःखदायी होता है। खुद की शांति के लिए हम स्वंय जिम्मेदार होते हैं और जब इस जिम्मेदारी को उठाते हैं हम स्वर्ग का निर्माण कर रहे होते हैं। सारा संसार हमारी ही सृष्टि है।

# देवात्मा का दर न मिलता, तो मैं कहां होता?

*आदरणीय श्रीमान जी बात यह है कि एक दिन सुबह-सुबह मैं देव मन्दिर में साधना करके पार्क में से गुजर रहा था कि मुझे अपनी कमी याद आ गई कि जो मुझे 15-16 वर्षों से नज़र न आई बचपन में मैं और मेरे कुछ दोस्त इकट्ठे पार्क में जाते थे वो भी जब शाम को अंधेरा हो जाता था तो हम वहां से पौधे उखाड़ कर घर लाकर लगा देते जो कि कई बार उगते नहीं थे। एक तो सार्वजनिक पार्क में से पौधों की चोरी करते और दूसरा न ही वह कभी घर में पौधे लग पाते। 17 वर्ष पार्क में जाते वहां धर्म की बातें भी करते मगर मुझे कभी नज़र न आया कि मैं चोर हूँ। मैंने पार्क में से पौधे चुराये हैं। मैंने पौधों के प्राण लिए हैं। हाय ये कैसे प्रभाव है देवात्मा के जिन्होंने मुझे मेरी कमी दिखा दी। जीवन में पहली बार मुझे ये वाली दिखाई दी। नहीं तो मैं समझता था कि मैं तो पेड़-पौधे लगाता हूँ। हाय ये कैसी नीचता कि मेरा जीवन चोरी का जीवन था। मैं घर में अपने को ईमानदार आज तक साबित करता रहा मगर नज़र आ रहा है कि मेरा जीवन घर से पैसे चुराना और लोगों की वस्तुएं चोरी करनी, सत्संगों में जाकर चप्पल बदल लेना था। हाय! मेरा जीवन नीचता का जीवन था। हाय मेरी जिन्दगी बचपन से ही लेकर काम वासना में ही गुजरी है। मेरे भीतर काम मूलक विचार चलते रहे। हाय! मैं काम वासना का पुतला मेरा भाव, मेरी क्रिया, दूसरी औरतों, लड़कियों को मीठी-मीठी बातों में उलझाना, उनकी प्रशंसा करना, उनको मीठी बातों से फुसलाना, मैं अपने इरादों में कभी कामयाब तो नहीं हुआ था मगर सोचता था कि कभी तो कामयाब हो जाऊँगा। सत्संग में जाते थे फिर भी बुरी नज़र किसी न किसी लड़की पर डाल ही देते। हाय! मुझे मेरी काम वासना, धन का अनुराग अपने स्वार्थ के लिए ही जीना नज़र न आया। सन्यासी होकर घर छोड़कर संतो महात्मा लोगों के पास रहकर सेवा साधना मंत्र अनुष्ठान करके तीर्थो की यात्रा करके भी मेरा धन अनुराग नजर न आया। आज भी ये धन का अनुराग मेरा पीछा नहीं छोड़ रहा। ये कैसी देव ज्योति है, ये कौन सी प्रभावकारी देव शक्ति है कि जो मुझे कमी दिखा देती है। हाय! मैं इतना नीच था कि अपने आप को सबसे बड़ा धर्मवान समझता था और दूसरे लोगों को नीच समझता था। मगर मुझे नीचता नजर न आई।*

*अधिक बोलना, चुगली तो मेरा भोजन था, जिसको न खाँऊ तो नींद न आती थी। झूठ बोलना मेरा कर्म था, और है।*

*मगर कमी नजर तो आ गई। मगर देव तेज मिल नहीं रहा। झूठ बोलना, चुगली सुनना और करना, बुराई का साथ देना जा नहीं रहा। कंजूसी इतनी है की खर्च करने को दिल नहीं करता। मान, यश की इच्छा जा नहीं रही है। देव ज्योति के लिए, देव तेज के लिए कोई माँग उठती नहीं। साधना*

*को मन करता नहीं, आलस्य शत्रु बन चुका है रात को, दिन को सीने का काम है। पैदल बिल्कुल भी नहीं चलता हूँ। जब देखी साईकिल होनी चाहिए। वजन शरीर का कम हुआ है। नीच अनुराग कम नहीं हो रहे हैं। उच्च अनुराग बढ़ नहीं रहे है। सुबह उठते ही सब्जी बोली पर जाता हूँ। वातावरण मेरा अजीब है। कुछ आलस ने मारा है। कुछ जान बूझ कर निक्कमा बन जाता हूँ। अपना ही अंहकार था मुझमें कि मैं सभी दोस्तों के सामने लड़कियों को छेड़ता था। एक बार किसी लड़की से गंदी छेड़खानी कि जो आज भी याद है जानबूझ कर मन्दिर से आती हुई लड़की से प्रसाद मांगना या फिर उसके साथ जाते हुए बच्चों को बुलाना, किसी भी बहाने से अपनी काम वासना को तृप्ति देना मेरा काम यही था। किसी को मेरी कमी का पता चल जाए और वो मेरा अपमान कर देता तो मैं उसका दुश्मन बन जाता और उसके लिए बुरी भावना रखता। मेरी जीवन आज तक चुगली, ईर्ष्या, द्वेष, जलन, अंहकार, क्रोध में ही बीता है। बस मेरी हर क्रिया नीचता में ही गुजरती रही। मैं मान-प्रशंसा का भूखा रहा। न जाने ये जिन्दगी कौन से नर्क कुड में गल सड़ रही होती। हाय! बचपन से ही गलत संगत में पड़ गया था। गाने बजाने वाले शराबी लोगों के साथ, तो कभी नीच से नीच लोगों के साथ मेरा जीवन नीचता में बीतता रहा तो कभी जिम्मेवारी से भागकर साधुसंतो के साथ कई वर्ष धर्म-कर्म करता रहे मगर कमी नजर न आई। मेरा फिर पतन हुआ धर्म के नाम से नफरत होने लगी। फिर रजनीश को पढ़ता रहा और फिर ध्यान, साधना, खाओ पियो मौज करो करता रहा। मेरा जीवन नीच से नीच हो गया अगर देव धर्म देव समाज न मिलता तो अपने आपको धार्मिक समझते रहते और इसी अंहकार में जीते और नीच अनुरागों में जीवन को आत्महत्या करके खत्म कर देते। श्रीमान जी अभी भी मेरे को दूसरों में उच्च गुण दिखाई नहीं देते अभी भी मैं माँ-बाप, भाई बहन, दादी, पड़ोसी और भी कई सम्बन्धी लोगों में आदर सेवा करने योग्य नहीं हुआ। चारों जगतों के उपकार, माता पिता, भाई बहन, के उपकार नजर नहीं आ रहे हैं और अपनी मनमानी ही करता हूँ। कुछ दिन पहले यह मे कमी नजर आई कि मैं इतना घंमडी इतना नीच कि अपने से बड़ी उम्र के नौकरों के साथ बदसलूकी से पेश आता रहा। आज से तीन वर्ष पहले एक नौकर ने एक टमाटर उठा कर क्या खा लिया मैं तो उसको कई लोगों के सामने बुरी तरह से अपमानित किया और एक बार पड़ोसी के नौकर ने गाजर उठा कर क्या खायी मैनें उसके मालिक, भाई लोगों के सामने बुरी तरह से अपमानित किया। एक बार याद है कि मैं पड़ोसी जो कि मेरे दादा-दादी के रिश्ते में लगते हैं, बुरी तरह छोटी सी बात पर झगड़ उठा और भी कई लोगों के साथ बुरा व्यवहार किया। अपने ही किरायेदार को एक बार बिना वजह से अपमानित किया। आज भी मेरा अकड़कर चलना अंहकार में आकर जीवन को नीच से नीच बनाना जारी है। हाय! मैं आज तक दूसरों से सेवा लेता ही रहा हूँ। मगर धन्यवाद, शुक्रगुजारी दुसरों की नहीं की। मेरे में कृतज्ञता नहीं है, अभी जीवन में कभी निराशा आ जाती है। चिंता आ जाती है। दुनिवायी चीजों से प्रेम जा नहीं रहा*

*विकास की तरफ कदम उठ नहीं रह और विनाश की तरफ कदम बढ़ जाता है। पशु सेवा कभी नहीं की। धन अनुराग के कारण कभी हरा - घास गौ को नहीं डाला। परोपकार का काम नहीं किया। वादा पुरा नहीं कर पाता अपनी बात पर खरा नहीं उतरता। नौकरी लगने से पहले कहता था कि अगर नौकरी लग जाए गाय की दादी की सेवा करूँगा। मगर नौकरी मिली तो भी सेवा न की और नौकरी छोड़ने के बाद भी सेवा नहीं कर रहा हूँ। इतना धन का अनुराग है कि एक रूपया भी खर्च करने को दिल नहीं करता। घर में फिर वातावरण खराब हो जाता है। सभी पल भर में देव धर्म से कटने लगते हैं और फिर वातावरण सही हो जाता है, बस यूं ही सिलसिला चलता रहता है। कई बार धन के अनुराग के कारण घर वाले कहते हैं कि श्री मान जी के पास तो पैसा खूब है बिन पैसे के कुछ भी नहीं। धर्म जीवन तो पैसे वालों के हाथ की बात है तो कभी कहते कि ये धर्म जीवन सब बातें है, आज कल सब कुछ पैसा है, और फिर जब पश्चाताप होता है और फिर सभा में चले आते हैं। श्रीमान जी साधन का नियम अब तक शुरू नहीं किया और न ही मन अभी धर्म जीवन पर चल रहा है। आप ही मुझे और परिवार के लोगों को बचा सकते हैं। मुझे आशा है कि आप हमारी मदद करेगें। मुझ में अभी सुख अनुराग बहुत हैं मगर शुभ का अनुराग नहीं है। मेरे में त्याग नहीं है। मैं सर्दी - गर्मी, भूख, स्वाद में मारा जा रहा हूँ। सर्दी बिलकुल सहन नहीं होती। गर्मी भी सहन नहीं होती। वातावरण के अनुसार जल्दी ही बिमार हो जाता हूँ। सोचा था कि शादी नहीं कराऊँगा वो भी सुख अनुराग के कारण। अगर देव धर्म न मिलता तो देव आत्मा जी का पता न मिलता तो यह बिल्कुल पक्का है कि मारा जाता कुत्ते की मौत! ज़िन्दगी का लक्ष्य मुझे पता न था।*

*धन्यवाद*

*अति नीच अनुरागी*

*एक श्रद्धावान*

# सूचना

*धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-*

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

# साफ - सुथरी सोच

मैं महिलाओं की एक स्वयंसेवी संस्था से जुड़ी हूं। पिछले वर्ष जब पाकिस्तान और जम्म-कश्मीर में भुकंप आया, तो हमारी संस्था की सदस्याओं ने भी पीड़ित व्यक्तियों के लिए पुराने कपड़े, दवाईयां एवं डिब्बाबंद खाद्यान आदि भेजने का निर्णय लिया। नियत दिन जब हम सभी सदस्याएं संस्था के भवन पहुंचकर अपनी-अपनी मदद के सामान को एक स्थान पर एकत्रित कर रही थीं। तो मैं यह देखकर दंग रह गई कि हमारी एक सदस्य बहन जो कपड़े लेकर आई थीं वे न सिर्फ धुले प्रेस किए थे, वरन अच्छी तरह से दुरुस्त किए हुए भी थे। उनकी इस बेमिसाल मदद पर संस्था की सदस्याओं ने जब प्रशंसा करते हुए उनसे पूछा कि आखिर कपड़े दुरुस्त करने का विचार उनके मन में कैसे आया? तो उन्होंने कहा 'यह तो सोचना ही पड़ता है कि जिसकी मदद की जा रही है, वह वस्तुएं उनके तत्काल उपयोग के योग्य हैं या नहीं। जिस तरह हम बिस्किट, जैम या अचार और दवाईया भेज रहे हैं, बस वैसे ही कपड़े भी दूं, ऐसा मन में आया।'

उनकी सहज, सरल बात ने हम सभी सदस्याओं को बेहद प्रभावित किया। मुझे लगा कि जिनके मकान भूकंप में गिर चुके हैं, परिजन बिछड़ चुके हैं और जो तन-मन-धन से आहत, त्रस्त किसी राहत शिविर में ज़िंदगी की बुनियादी ज़रूरतों के लिए संघर्ष कर रहें हैं, उनकी अगर हम सचमुच कोई मदद करना चाहते है तो यकीकन वह इस रूप में ही की जानी चाहिए कि हर सामान तत्काल प्रयोग के योग्य हो। फॉल उधड़ी साड़ी, बटन टूटे स्वेटर, सिलाई खुली सलवार-कमीज़ या हुक टूटे बलाउज़ अथवा बच्चों या पुरुषों के कपड़े, पीड़ितों का शरीर जरूर ढक सकते है, पर 'ऐसी मदद की' बदहाल स्थिति उनकी मानसिक पीड़ा को और बढ़ाती ही होगी।

यह सच है कि आज जागृति व चेतना के चलते हम शहरी ही नहीं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं तक राष्ट्रीय या प्राकृतिक आपदा के समय अपनी सूझ-बूझ से व्यक्तिगत या संस्थागत रूप में हर संभव मदद करने के लिए तैयार रहती हैं परंतु ऐसी सचेतन दृष्टि या वैचारिक क्रियान्वयन का अभाव, हमारी मदद को पूर्णत: सार्थक या कारगर नहीं बना पाता । यह विचार मुझे केवल आपदा प्रभावित लोगों के संदर्भ में ही नहीं, बल्कि रोज़मर्रा की जीवन-शैली में हमेशा के लिए आत्मसात करने योग्य लगा।

अक्सर हम महिलाएं अपने घर का पुराना सामान अपने घर की महरी, आया या माली को देते हैं। दीवाली या गर्मी की छुट्टीयों के बाद बच्चों का पुराना स्कूली सामान, बड़ी उदारता से उन्हें थमाते हम अक्सर कह उठते हैं- 'बस बस्ते की चेन का हुक टूटा है, लगा लेना, थोड़ी-सी फॉल उधड़ी है सिल लोगी, तो ये साड़ी पूरी बरसात काम आएगी' आदि।

ऐसा करते समय तमाम सुख-सुविधाओं से लैस होकर भी घर के उधड़े कपड़े दुरुस्त करने का समय व मन न निकाल पाने वाली हम गृहणियां अक्सर यह भूल जाती हैं कि सर्दी, गर्मी, बारिश में एक घर से दूसरे घर घूमकर दिनभरा रोज़ी-रोटी की जुगत में जुटी हमारी महरी आखिर फॉल टांकने का समय कब निकालेगी? या उसके पास इसकी सुविधा होगी।

अब तक टूटे हैंडिल वाले कप, रंग उतरे डिब्बे, स्ट्रैप-टूटी चप्पल या टूटे बटन-हुक वाली यूनीफॉर्म, महरी या किसी ज़रूरतमंद को थमाकर,

*बाकी पेज़ 12 पर*

# सफाई, सुन्दरता और तरतीब

आज-कल दिवाली के दिनों में घर-घर में सफाई का अभियान, चल रहा है। परम पू० भगवान देवात्मा ने दिवाली के साथ भौतिक जगत के यज्ञ को जोड़कर हमें जाग्रित करने का महान कार्य किया है। भौतिक जगत अर्थात बेजान वस्तुएं हमारी अटूट सम्बन्धी हैं। कई वस्तुएं हमें मुफ्त में मिल रही है। धरती, सूर्य, हवा, पानी हमारे जीवन के आधार हैं। परन्तु बहुत सी बेजान वस्तुएं हम अपनी अवश्यकतानुसार इकटठी करते है। घर बनाते हैं, उसका सामान बनाते हैं, कपड़े बनाते हैं। इस प्रकार यह वस्तुएं कई बार अपनी अवश्यकता से बढ़ चढ़ कर इकटठी करते हैं।

कुछ ऐसी चीज़े जिसकी हमें जरूरत नहीं होती, हम कबाड़खाने में या स्टोर में फैंकते जाते हैं, परन्तु उन्हें फैंकने या किसी जरूरत मन्द को देने का साहस नहीं करते। फजूल के डिब्बे स्टोरज़ में पड़े मिलेंगे, यहां तक कि अगर फैंकने के लिए बाहर भी निकालें तो सुबह तक वह आधे भी नहीं रहते, एक-एक मैंम्बर यह सोचकर कि यह तो काम आएगा उठाते जाते हैं और अगले साल तक वह कबाड़ में और इज़ाफा कर देते हैं।

कई ऐसी चीज़ें होती हैं, जो आपके काम की नहीं, परन्तु और किसी के काम आ सकती हैं, वह दे नहीं सकते। पिछले दिनों हमने स्विच बोर्ड और स्विच बदले, पुराने काफी अच्छे Condition में थे, हमने इकट्ठे करके रख दिए। अचानक एक साधारण नौकरी पेशा जन आया और कहने लगा कि मैं छोटा सा घर बना रहा हूं, मैंने पूछा कि आपने तारें और Switch तो नहीं लगवाए। उसने तारें ही अभी डलवाई थी, तो मैंने उसे 30-31 Switch Board स्विचज़ के साथ दे दिए, उसकी काफी बचत हो गई और मेरी जगह खाली हो गई। ऐसा बहुत सा सामान हम यह सोचकर रखे रहते हैं कि कहीं काम आएगा। कपड़े पुराने भी 2-4 बर्तनों के लिए इकट्ठे करते रहते हैं, जबकि वह गरीब के काम आ सकते हैं।

मोटी सफाई तो सब को करनी पड़ती है, परन्तु आपके नहाने वाली बाल्टियां, मग, बाथरूम में नहाने का स्थान Toilet Seats ऐसी होती हैं कि जिन को देखना भी कई बार मुश्किल लगता है। नई चीज़ें कुछ ही दिनों में फैंकने योग्य हो जाती हैं, लाईटस, पंखे कभी ही साफ किए जाते हैं।

तरतीब भी सफाई के साथ अवश्यक है। किताबे खाने में तो रख देंगे, पर सब उटपटांग। पौधे लगाकर खुश हो जाते हैं, जबकि वह धीरे-धीरे झाड़ी का रूप ले लेते हैं। उनकी समय-समय पर कटिंग न हो तो उनकी सुन्दरता ही खत्म हो जाती है।

भौतिक जगत के दिनों में हम यह प्रण लें कि भौतिक वस्तुओं की सफाई और सुन्दरता की ओर ध्यान देंगे। अपनी सफाई, अपने घर, कमरे की, किताबों की, बाथरूमज की नियमित सफाई की ओर ध्यान देंगे ताकि बेजान चीज़ें भी हमारे हाथ में आना अपना सौभाग्य समझें।

सुरजीत बराड़

*पेज़ 11 का बाकी*

कबाड़ से मुक्ति के साथ दान या सेवा की थोड़ी सी आत्मतृष्टि पाने वाली मैं उस दिन ग्लानि के वशीभूत थी। साथ ही मन ही मन बहुत कृतज्ञ थी उन सदस्य बहन की, जिन्होंने अनजाने में मुझे एक ऐसी जीवन-दृष्टि दे दी, जो अब हर वक्त मददगार हाथ बढ़ाने से पहले एक रोशनी की लौ बनकर मेरा मार्गदर्शन करती रहेगी।

(दैनिक भास्कर)

# हमने क्या खो दिया है?

जब किसी मनुष्य को खूब धन मिल जाता है, मोटर गाड़िया मिल जाती हैं, रहने के लिए आलीशान मकान मिल जाता है, तो साधारण मनुष्य यही समझने लगता है कि उसने सब कुछ प्राप्त कर लिया है। ऐसे आदमी को देखकर साधारण सुविधाएं रखने वाले जन अपने आपको अभाव ग्रस्त भी देखते हैं और ऐसी कामना करते हैं कि हमें भी यह सब कुछ प्राप्त हो जाए, तो हम कितने खुशनसीब बन जाएं।

परन्तु इन सब की प्राप्ति में एक एक मनुष्य क्या क्या खो देता है, इसका अनुमान ही कठिन है। एक एक ऐसे जन का उदाहरण मेरे सामने आ रहा है। नौजवानी का आलम है, अपने पास अच्छी सुविधा जनक जिन्दगी है, दो प्यारे प्यारे बच्चे हैं, परन्तु और पाने की होड़ में अपने अच्छे संस्कारों का त्याग होने लगता है। और बड़ा मकान, और बड़ी कारें और बड़ा व्यवसाय पाने के लिए वह यह भूल जाता है कि वह खो क्या रहा है। अपनी पहुंच से अधिक खर्च करके कर्जदारों के तकाज़े शुरू हो जाते हैं, कई प्रकार के मानसिक तनाव में से गुज़रते हुए, शराब की लत और बढ़ जाती है, जिससे पीलिया का शिकार हो जाता है, उसका दो महीने बड़े हस्पताल में ईलाज़ चलता रहा, जिगर बिल्कुल खराब हो गया, डाक्टर यह कहते है कि एक बूंद भी शराब की इसके लिए ज़हर है, परन्तु फिर चोरी छुपे वह कभी कभी शराब पी लेता है। इतने में आर्थिक स्थिति इतनी बिगड़ जाती है कि उसे अपना देश छोड़कर दूसरे देश जाना पड़ता है। वहां पर परिवार से दूर और भी कई प्रकार की बुराईयों का शिकार हो जाता है। अपने देश में महलनुमा मकान तो बन जाता है, परन्तु एक दिन सारे सिस्टम फेल होने से उस मकान में रहने की तमन्ना रखने वाला 46 वर्ष की उमर में मौत को गले लगा लेता है। दो बिलखते हुए बच्चे और जवान पत्नी को ज़माने भर की उलझनें देकर इस दुनियां को अलविदा कह देता है। कितना दर्दनाक दृष्य! और पाने के संग्राम में मनुष्य बिल्कुल ही भूल जाता है कि वह क्या कुछ खो रहा है।

उसके कुछ सम्बन्धी देवात्मा गुरू के विषय में जानते ही हैं, परन्तु फिर भी उसी विनाश के मार्ग पर सरपट भाग रहे हैं। प्रत्येक मनुष्य नीच सुखों की चाट को लेते लेते इतना अंधा हो जाता है कि उसे ऐसे अनुभव होने लगता है कि वह तो बेवकूफ थे, हम तो बहुत चतुर हैं। अपनी योग्यताओं और सफलताओं पर मनुष्य गर्व से भरा रहता है, परन्तु जीवन विषयक रोशनी के बिना मनुष्य जिस पतन के गहरे गढ़े में गिरता है, नीच सुखों का अंधकार उन्हें देखने ही नहीं देता। दिन पर दिन मनुष्य उन वस्तुओं को प्राप्त करने की होड़ में लगा रहता है कि जो उसके साथ नहीं जा सकती और उन कीमती चीज़ों को खोता जाता है कि जिनसे वह सुख की जिन्दगी भी जी सकता है और अपनी जीवनी शक्ति को बलवान बनाकर इस लोक और परलोक में जीने का अधिकारी बनता है।

एक एक मनुष्य अपने नीच सुखों की चाट में अपनी ईमानदारी को खोता है, कर्ज़ाई होकर अपने आत्म सम्मान को खोता है। अपनी कीमती

सेहत को खोता है। अपने सम्बन्धों में तनाव ग्रस्त रहता है। तनाव को दूर करने के लिए वह कई प्रकार के नशों का शिकार हो जाता है। वह नशे उसे मौत के मुंह में पहुंचा देते हैं। इस पृथ्वीपर इस अमूल्य जन्म को पाकर बहुत कुछ पाने की होड़ में सब कुछ ही खोता जाता है, कितना बड़ा घाटा।

हमें यह सच्चाई कभी नहीं भूलनी चाहिए कि हम जिन सौभाग्यवान जनों को देवात्मा का दर प्राप्त हो गया है, उनकी बेकदरी न करें। उनकी ही अलौकिक रोशनी में हमें जीवन सम्बन्धी सच्चाईयों को देखने का सौभाग्य प्राप्त हो सकता है। नेचर के नियम अटल हैं, उनकी अवहेलना अपने भयंकर परिणाम पैदा करती हैं और उन परिणामों से हमारी कोई चतुराई, कोई योग्यता हमें बचा नहीं सकती। इसलिए अभी भी समय है कि ऐसे सतगुरू की रोशनी को प्राप्त करें और हम चंद महत्वकांक्षाओं के पीछे अपेने कीमती जीवन को न खो दें।

(सुरजीत बराड़)

# शुभ संग्राम

**संगरूर :-** 22 सितम्बर 2006 को श्रीमान बलदेव सिंह सुबह यहां पहुंचे श्रीमान सीताराम जी को मिले। श्रीमान सीता राम जी को लेकर वहां से सब साथी मोगा के लिए रवाना हो गए।

**मोगा :-** रात को यहां मास्टर अवतार सिंह जी के घर चन्द साथियों को लेकर सभा की। उसमें बताया गया कि मनुष्य अन्धकार के कारण नीच सुखों की पैरवी करते हुए बड़ी-बड़ी उपलब्धियां करता-करता बर्बाद हो रहा है। वह दुखों का शिकार हो रहा है। गुरु महाराज धर्म के सूर्य हैं। वह उन्हें अपनी धर्म शक्तियों के द्वारा बर्बादियों से बचाते हैं। कितने ही उजड़ रहे घरों, परिवारों और अन्य जनों के जिन्दा उदाहरण पेश किए गए। गुरु महाराज से जुड़ना बर्बादी से बचना है।

**डबवाली :-** श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान सीताराम जी यहां मंदिर में पहुॅचे । यहां सीता राम जी कुछ दिन सेवा के लिए रुक गए और प्रबन्ध सम्बन्धी बातचीत करते रहे। शाम को श्रीमान बलदेव सिंह सिरसा होते हुए, कुछ देर मलेका रुके, वहां धर्म सम्बन्धियों को सत्संग के विषय में बताया और फिर 6½ बजे केसूपुरा पहुंच गए।

**केसूपुरा :-** यहां रात को 8½ बजे सभा रखी गई। इसमें 60-70 के करीब हाजरी थी। स्त्रियां भी काफी गिणती में शामिल थी। श्रीमान जी ने सभा में बताया कि नेचर में नियम काम करते हैं। एक यह नियम है कि जैसी हमारी संगत है, हमारे मित्रगण हैं, हमारा चौतरफा वातावरण है, हम उसके अनुसार ढल जाते हैं, उन्हीं को ठीक मानते हैं, उनको कोई ग़ल्त न कहे तो उसका विरोध करते हैं। इस नियम की व्याख़्या की। गुरु महाराज की संगत से जुड़कर जो लाभ होते हैं उनको उदाहरणों सहित बताया गया। अगले दिन का प्रोग्राम बताया गया।

**24 सितम्बर सुबह** की सभा 8½ बजे की गई । इस सभा में बताया गया कि यदि किसी घर को आग लग जाये, वहां पर सबको भाग-भाग

कर पानी डालने की ज़रूरत है। वहां पर लाऊड स्पीकर लगाकर भजन, पाठ की टेपें लगाने की आवश्यकता नहीं। सम्बन्धों में फसादों की, नशों की, काम वासना की भयंकर आग को स्पष्ट रूप से बताने की कोशिश की। इस प्रकार की आग की लपटें संसार को जला रही हैं । संसार में पूजा पाठ, जगराते, सिमरन, नाम जपने के बहुत से साधनों के द्वारा इस आग को बुझाने का संग्राम हो रहा है, परन्तु इन साधनों से यह आग कैसे बुझे। पहले तो यह अग्नि और उसकी भयानकता उनको दिख नहीं सकती, फिर इसे बुझाना कैसे है यह पता नहीं। देवात्मा सत्गुरू के पास ऐसी रोशनी है, जो इस आग को बुझाती है, फिर यह आग कैसे बुझी, उसके अपने-अपने अनुभव हाजरीन ने बताए। देवात्मा के देव तेज के विषय में विस्तार से बताया, जो इस आग के प्रति घृणा शक्ति पैदा करता है। सभापति जी ने यह स्पष्ट किया कि पापों की आग बुझाने का सच्चा पानी देवात्मा की ज्योति शक्ति है। देवात्मा ही यह क्षमता रखते हैं। बेशक इस आग को बुझाने को अवश्यकता को किसी ने नहीं समझा और न ही ऐसा मिशन किसी ने आरम्भ किया है। यह सभा अच्छी प्रभावशाली थी।

**रात 8 बजे :-** एक और सभा की गई। इसमें 70-80 स्त्री पुरुषों की हाजरी थी। इसमें बताया गया कि यदि मनुष्य को यह बात साफ हो जाये कि उसको कौन चलाता है, तो उसका बहुत भला हो सकता है। अभी तक उसे इसका ज्ञान नहीं। इसीलिए धर्मों के द्वारा कोई भलाई नहीं आ रही । मनुष्य को ईश्वर वा देवते नहीं चलाते। नाम जपने से हम सुखी नहीं हो सकते । मनुष्य जीवन की मुख्य समस्या यह है कि वह अपने चालक भावों का ज्ञान नहीं रखता, जिसे पाना अति आवश्यश्क है। मनुष्य के भाव उसको एक फुटबाल बनाकर खेल रहें हैं, परन्तु उसे कोई पता नहीं। सब घाटे वा हानियां उसके अपने भावों के प्रति अज्ञानी रहने के कारण हैं। जीवन में यह सबसे अधिक अवश्यक काम है, जिससे मनुष्य उदासीन है। हानि प्राप्त भावों से बचने और हितकर भावों को पैदा करने की आवश्यकता है।

**25 सितम्बर :-** सुबह की सभा में बताया कि मनुष्य का रूप पाप परायण है उसके कारण दुख और नाश होता है। अपनी नीचता को देखने वा उससे निकलने की आवश्यकता है। इसके लिए गुरु महाराज की रोशनी की आवश्यकता है। नीचता से गुरु महाराज की रोशनी ही निकालती है। अपने आप उससे निकलने की मनुष्य में क्षमता नहीं है। रात को 8 बजे एक सभा की गई। इसमें भी 60-70 के लगभग जन शामिल थे। इसमें सम्बन्धों के विषय में बताया गया। धर्म सम्बन्धों को स्वर्गिय बनाते है। स्वर्गिय सम्बन्ध उच्च सूत्रों वा उच्च भावों के साथ जुड़ने से बनते हैं। निज स्वार्थ से सम्बन्धों के साथ जुड़कर नर्क पैदा होता है। गुरु महाराज आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति बनाकर इस धरती पर स्वर्ग पैदा करते हैं। कितने ही स्वर्गिय सम्बन्धों के उदाहरण पेश किए गए। बहुत सुन्दर मण्डल पैदा हुआ ।

**26 सितम्बर :-** सुबह की सभा 8½ बजे की गई। अन्य जनों के भिन्न 80-90 स्कूल के बच्चे, स्टाफ (जो साथी सेवक सरताज सिंह जी लेकर आए) आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया

गया कि जो केवल अपने लिए जीता है उसका जन्म निष्फल जाता है। जो दूसरों के लिए जीते हैं वह जीवन सफल कर जाते है। मनुष्य अपने शरीर को वा धन पदार्थों को सम्भाल सम्भाल कर रखता है, किसी को देने में नहीं आता । यह दोनों चीजें नाशवान हैं। ऐसे मनुष्य धर्म नहीं पा सकते । शुद्ध परोपकार बिना कोई धर्म नहीं आता। हमारे लिए जिन्होंने खून पसीने बहाए हैं यदि हम उनके काम नहीं आते तो परोपकार क्या करेंगे। कैसे एक जन ने दक्षिण भारत से आकर एक 6 बच्चों की मां को गुर्दा देकर उसकी जान बचाई, यह सच्ची कहानी बताई। अन्य घटनाओं के भिन्न श्री दसौंदी राम जी के जीवन का ब्यान किया।

काफी प्रभावशाली वातावरण बना। आखिर में हाजरीन ने 1050 रु० दान में दिए। हिसार से एक नौजवान आकर सभा में शामिल हुए। जय ध्वनि करके यहां का प्रोग्राम समाप्त हुआ।

**पदमपुर :-** 26 सितम्बर रात 8½ बजे यहां सत्संग की सभाएं आरम्भ हुई। इसके लिए श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, श्री मान ओम प्रकाश जी वर्मा यमुना नगर से अगली सुबह 5.30 बजे पहुंच गए थे। 2 जन गजसिंहपुरा से पहुंच गए। शाम की सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि महान हस्तियों को न पहचानने वालों को बहुत घाटा उठाना पड़ता है। महान हस्ती की कोई हानि नहीं होती । बहुत सी उदाहरणों के द्वारा बताया गया कि देवात्मा लासानी हस्ती हैं, वह परम महान कारज कर रहे हैं, जो आज किसी ने नहीं किया, न ही उनके बिना कोई कर सकता था।

आज भी यह कारज कहीं नहीं हो रहा । ऐसी हस्ती की विलक्षणता को भी कोई जन न देख सके तो उसकी बदकिस्मती है। वह बहुत बड़ा घाटा और हानि उठाने के लिए है। देवात्मा मनुष्यों के घोर पापी और नीच जीवनों को परिवर्तित करते हैं। उन्हें उच्च वा भला बनाते हैं। ऐसा कारज कोई नहीं कर सका। पिता को या सगे सम्बन्धियों को कत्ल करने के मन्सूबे बनाए फिरने वाले वजूदों के सरदारों को, डाकुओं से हिस्सा लेना छुडवाकर उनको भद्र जन बना दिया। उनसे मन्दिर, शान्ति भवन और स्कूल बनवा दिए। लड़कियों को मारने वालों को बदल कर कन्याओं के लिए चार-चार स्कूल खुलवा दिए। मरती हुई रुहों को मौत के मार्ग से हटाकर जीवन के मार्ग पर डाल दिया और दृष्टांतों के बाद बताया कि ऐसे अद्भुत कारजकर्ता के स्वागत के स्थान पर उनका अनादर और ग़फलत वा अपमान, बहुत बड़े घाटे की चीज़ है, बहुत बड़े मन्दभाग हैं।

**27 सितम्बर :-** सुबह 8.30 बजे की सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य को एक परम आवश्यक सोझी की आवश्यकता है। उस सोझी के बिना मनुष्य बहुत हानि उठाता है। यह भी बताया गया कि नेचर में परिर्वतन जारी है। नेचर की प्रत्येक जानदार व बेजान चीज़ हर क्षण बदल रही है। शरीर और बुद्धि का बदलना तो किसी हद तक नज़र आता हैं। पर मन या आत्मा भी प्रत्येक क्षण बदलता है, बिगड़ता है या संवारता है, जीवन की ओर जा रहा है या मृत्यु की ओर जा रहा है, यह नज़र नहीं आता। यह सोझी धर्म अभिलाषा के लिए अति आवश्यक है। हर विश्वास, चिन्ता, बोल और क्रिया हमारे भीतर परिवर्तन पैदा करती है। इसके प्रति केवल और केवल देवात्मा ही मनुष्य को जाग्रित करते हैं। इस सोझी के बिना

मनुष्य पशु के समान है। देवात्मा के दर पर आकर आत्मिक सोझी पैदा होने की बहुत सुन्दर घटनाएं बताकर सभा समाप्त की गई।

**27 सितम्बर :-** 8.30 बजे शम को सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। सभापति जी ने बताया कि देवात्मा के दर की महानता और बरकतों को ब्यान नहीं किया जा सकता। यहां मनुष्य की रक्षा और विकास के पूरे सामान मौजूद हैं। इस दर के बिना इन्सानियत का कोई गुज़ारा नहीं। एक परिवार की नारकिय दशा का ब्यान किया गया। उसकी तह में एक जन का शराब पीना है वह शराब को प्यार करता है, जो वास्तव में प्यार करने की वस्तु नहीं। इस सच्चाई को देख नहीं सकता। देवात्मा दुख और विनाश करने वाली वस्तुओं के प्यार की भयानकता को दिखाते है और दिखा सकते है, जिससे वह नर्क दूर हो सकता है, और कोई मार्ग नहीं, घर-घर प्रवीन महाजन भरे पड़े हैं, उनकी रक्षा केवल देवात्मा ही कर सकते हैं, इस दर को पहचानना और उसके साथ जुड़ना सचमुच अपनी रक्षा और विकास के मार्ग पर चलना है।

**28 सितम्बर 8.30 बजे सवेरे :-** इस सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि विद्या ऐसी चीज है कि इसकी प्राप्ति हानिकारक नहीं होती इसके बहुत लाभ हैं। परन्तु मनुष्य अबोधी है कि वह इस सच्चाई को नहीं देख सकता। विद्या प्राप्ति के लिए भी संग्रामशील नहीं होता, इतना अबोधी है । सैर के अनगिणत लाभ हैं, सुबह पानी पीने के कितने लाभ हैं। 3 तुलसी के पत्ते सेवन करने का भी लाभ है, परन्तु ऐसे लाभों के प्रति भी मनुष्य संग्रामशील नहीं होता। गुरु महाराज की शिक्षा के कितने लाभ है। जिस मात्रा में भी मनुष्य उनका साथ देता है, उसको लाभ होना आवश्यक है। मनुष्य अपने लाभ और हानि से पूर्ण उदासीन है। इस ग़लफत से जागने की बहुत आवश्यकता है।

**28 सितम्बर 8.30 बजे :-** शाम की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। सभापति जी ने नीच अनुरागों का घटनाओं द्वारा भयानक रूप पेश किया । काफी प्रभावशली ब्यान था।

**29 सितम्बर 8.30 बजे :-** सुबह की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कराई इसमें बताया गया कि दुनिया दुखों का घर क्यों है ? बड़े-बड़े फिलासफर, लेखक, नेता, अफसर और परिवारों के परिवार दुखों: से भरे पड़े हैं। दुखी जनता दुखों से बचने के लिए देवी देवताओं, पीरों, गुरुओं, सिमरण, जाप, पाठ आदि द्वारा दुखों का ईलाज ढूंढती है। जीवन तत्व दर्शक देवात्मा ने प्रगट होकर बताया है कि मनुष्य को परमात्मा या और देवी देवता नहीं चलाते, उनके भाव वा सुख लालसाएं चलाती हैं, सभापति जी ने बड़े जोश से भरकर बताया कि कुत्ते हड्डा रोड़ी में हड्डी घसीटते फिरते हैं, उसी प्रकार नीच सुख अनुराग मनुष्य को घसीटे फिरते हैं। पाठों-जापों और पूजा से यह दुख नहीं जा सकते। मनुष्य को अपने भीतर जो नीच वासनाओं के कुत्ते घसीटे फिरते हैं, उनको जानने की आवश्यकता है। वह उसे बर्बाद कर रहे हैं। उसके अपने भीतर न उनको जानने की और न ही बचने की समर्थ्य है। जापों-पाठों से यह दुख नहीं जाते। देवात्मा की ज्योति शक्ति जिन सौभाग्वान जनों को मिल जाती है, वह इन नीच सुखों के भयानक रूप को देख सकते है और इनके पंजे से बच सकते है।

**29 सितम्बर 8.30 बजे:-** रात की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई । इसमें

बताया गया कि गुरू महाराज ने फरमाया है कि मनुष्य समाजिक प्राणी है। सम्बन्धों में ही जीता है, उन्हीं में उसकी पालना होती है। इसलिए सम्बन्धों में ही धर्म है, सम्बन्धों में ही पाप है। माता-पिता और अन्य सम्बन्धों में मिठास लाने का भगवान देवात्मा का कारज बताया गया ।

**30 सितम्बर 8.30 बजे :-** सुबह की सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने झूठे बहकावों, अर्थात जेवर दुगने करने आदि के विषय में बताया। पू० भगवान की नीच से उच्च बनाने का कारज कर रहे हैं। उनके इस महान कारज की महिमा देखने की आवश्यकता है।

**30 सितम्बर शाम की सभा** में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि विरासत और वातावरण मनुष्य के जीवन को प्रभावित करता है। विशेष प्रकार की गेहूं विशेष वातावरण में ही फलती फूलती है। खुश्क वातावरण में नहीं। शारीरक मानसिक वा हार्दिक योग्यताओं की विरासत का विशेष वातावरण में ही विकास होता है। राजस्थान के वातावरण में दमा दूर हो जाता है। बुरा वातावरण बहुत सारी सामाजिक बुराइयों की जड़ है। देव धर्म का विशेष रूहानी वातावरण है, जो बुराईयों से बचाता है, उच्च भाव पैदा करता है। डा० हरनाम सिंह जी को नीच जीवन से निकाल कर फरिश्ता बना दिया। उच्च वातावरण की अज़मत से हाजरीन बहुत प्रभावित हुए।

**1 अक्तूबर 8.30 सुबह** श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सभा में फरमाया कि मनुष्य दूसरों के गुणों को देखने, उपकारियों की मेहरबानियों को देखने, दूसरो के दुख दर्द को देखने, सबसे बढ़कर अपनी ग़ल्तियों को अनुभव करने और देखने के विषय में अन्धा है। सभापति जी ने बताया कि हमारे जीवन दूसरों की मेहरबानियों की देन हैं। श्रीमान जी ने अपने उपकारियों के उपकारों का वर्णन किया जिसका बहुत प्रभाव पड़ा।

**1 अक्तूबर की शाम की सभा** में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि कनल जी ने लिखा है कि कृतज्ञता अपनी अर्वतमानता के कारण जानी जाती है। सबसे बढ़कर नाशुक्रे बच्चे ही होते हैं। कहा जाता है कि "as ungratefull as a son"

देवात्मा ने नाशुक्रे बच्चों को शुक्रगुजार बना दिया, सम्मान करने के योग्य बना दिया। स्वंय का परिर्वतन वा अन्य कई जनों का परिवर्तन बताया ।

**2 अक्तूबर की सभा** में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि दुनियां में सबसे बड़ी समस्या अपने नुक्स न देखने की है। जो विद्यार्थी अपनी ग़ल्ती नहीं देखता, वह कभी अध्यापिक से लाभ नहीं उठा सकता। कसाई भी अपने आपको निर्दोष समझता है। इस पाप की कमाई को मेहनत की कमाई समझता है। वैश्या बनकर अपने आपको Sex Worker का नाम देते हैं। देवात्मा की रोशनी में अपनी नीचताएं नज़र आती हैं। मनुष्य पापों से तौबा करता है। उदाहरण देकर देवात्मा के कारज को बताया गया।

**गिद्दड़बाहा:-** सारी उपरोक्त पार्टी यहां पहुॅचकर श्रीमान तजिन्द्र सिंह जी और उनके परिवारिक जनों को मिली।

**कल्याण :-** यहां रात की सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि जैसे समुद्र में गोते खाने वाले जन के लिए दुख और विनाश है, कोई उसे निकाल दे तो उसके सौभाग्य की कोई सीमा

नहीं। देव धर्म एक विकासकारी डार है, जिसके साथ जुड़कर हमारा परिवार उपकार प्राप्त कर सका । देव समाज के बचावनहार जहाज में सवार होकर डूबने से बच गया है और इस जहाज में सवार होने वाले जनों का विकास और बचाव सम्भव है।

**3 अक्तूबर सुबह की सभा** में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि हम पशुओं से विकसित हुए हैं। वह प्रकृति हम में है। पर के लिए कुछ किए बिना भला नहीं हो सकता। जानवरों को मुठ्ठी दाने डालना, पानी रखना चाहिए। और भी छोटे - छोटे परोपकार के साध न करते रहना चाहिए।

(एक सेवक)

❖❖❖❖❖❖❖❖

# श्री अकबरपुर में पशु जगत सम्बन्धी विशेष सभा

श्री मान किशन सिंह जी चौहान ने पशु जगत के सम्बन्ध में भगवान देवात्मा की अद्वितीय शिक्षा का वर्णन किया। शाकाहार के महत्व को बताया। स्कूल के विद्यार्थियों ने बड़े ध्यान से सभा सुनी जब सभापति जी ने शाकाहारी बनने की अपील की कि मैं बिल्लियों से नहीं कहता कि वे चूहे खाना छोड़ दें, बगुलों से भी नहीं कहता कि वे मछलियां खाना छोड़ दें, न हीं गीदड़ों और भेड़ियों से ऐसा कुछ कहता हूं।

लेकिन आप तो मानव हैं न? मांस तो मानव का आहार ही नहीं हैं। क्योंकि मांसाहार अप्राकृतिक है, अमानवीय है, अनैतिक है, और अवैज्ञानिक है, और हिंसक है। इसलिए त्याजय है।

सभापति जी ने बताया कि मानव जगत में जब तक पशुओं का कतल और मांसाहार रहेगा तब तक विश्व में शान्ति स्थापित नहीं हो सकती, युद्ध और आतंकवाद बढ़ता रहेगा।

सभा से प्रभावित होकर स्कूल के चार विद्यार्थियों ने मांस व अण्डा न खाने का संकल्प किया तो सभा हाल खुशी से, तालियों से गूंज उठा। भगवान देवात्मा धन्य है।

अध्यापक श्री रमेश सिंह जी सचान एम. ए. बी. एड. ने कहा कि मैं मांसाहार तो नहीं करता परन्तु तम्बाकू व पान मसाला खाता था परन्तु जिस दिन से मैं देव समाज स्कूल में आया तभी से मुझे तम्बाकू आदि से घृणा हो गई और आज से मैं इस व्यसन का पूर्णत: त्याग करता हूँ। संकल्प करने वालों को फलाहार कराया गया। एक विद्यार्थी ने बताया कि मुझे सभा में कुत्ते की वफादारी की घटना बहुत अच्छी लगी। एक ने कहा कि अब मैं पशुओं को ढेला या पत्थर नहीं मारूंगा तथा उनकी सेवा करूंगा। एक सेवक ने बताया कि इन दिनों मैं प्रतिदिन पक्षियों को दाना व पानी रखता रहा हूं। सभापति जी ने बताया कि इन दिनों में मैं प्रतिदिन प्रात:काल पावन हवेली के ऊपर कबूतरों के कमरे के सामने दाना व साफ पानी रखता रहा हूँ, एक दिन कई जंगली कबूतरों को दाना चुगते व पानी पीते देखा तो गदगद हो खुशी से आंसू निकल पड़े। वाह! मेरे भगवान की अतीत की हितकर घटनाएं सामने आ आकर कैसे भाव विभोर करती है।

-एक सेवक

# महोत्सव का कार्यक्रम

**रविवार 3 दिसम्बर 2006**

प्रवेश सभा – 5.00 बजे सायं

**सोमवार 4 दिसम्बर 2006**

1– पहली सभा – 8.30 बजे प्रात:

**विषय –** परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्ध

2 – पब्लिक लैक्चर – 4.00 बजे सायं

**वक्ता –** प्रिंसीपल मिसिज़ सुरजीत बराड़

**मंगलवार 5 दिसम्बर 2006 (महोत्सव का विशेष दिन)**

सूर्य निकलने के समय जो कि आत्मिक जगत के सूर्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के शुभ जन्म का समय है, बैंड, बाजा, कीर्तन, शुभकामनाएं और जय ध्वनि – 6.30 बजे प्रात:

1– पहली सभा 8.30 बजे प्रात:

**विषय –** भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बन्ध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता । धन और जन की अपील।

2 – दूसरी सभा – 2.00 बजे दोपहर – बच्चों की सभा और संगीत सभा ।

3 – पब्लिक लैक्चर – 4.00 बजे सायं

वक्ता – डाक्टर विनोद जी खेड़ा

4 – दीप माला – 6.00 बजे सायं

5 – आलोचना सम्बन्धी सुझाव (लिखकर दे सकते हैं)

**बुधवार 6 दिसम्बर 2006**

1– पहली सभा – 8.00 बजे प्रात: सेवक, सेविकाओं का ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति तथा पारिवारिक अनुष्ठान

2 – भाव प्रकाश

3 – देव आरती का गान और जय ध्वनि

**नोट :–**

1. कृपया सेवक – सेविका अपनी एकाकारियों के साथ शामिल हों ।
2. आवश्यकता पड़ने पर किसी कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है ।
3. यात्रीगण कृपया अपने बिस्तर अवश्य साथ लाएँ।

– मन्त्री

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

**Book Post**